गुरु जाम्भोजी की वाणी में कर्म की अवधारणा

GURU JAMBHOJI KI VANI MEIN KARM KI AVDHARNA

लेखक –

डॉ. पुष्पा विश्नोई
सहायक आचार्य (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय, बावड़ी (जोधपुर)

भारतीय दर्शन में प्रायः सभी महापुरुषों ने कर्म की व्याख्या की है। कर्म शब्द संस्कृत की 'कृ' धातु से निष्पन्न है। 'कृ' धातु का अर्थ सकर्मक क्रिया के अनुसार 'करना' है। अतः जो मानसिक और शारीरिक क्रियाएं होती हैं। वे कर्म के अन्तर्गत आती हैं। अच्छे तथा बुरे दो प्रकार के कर्म सभी धर्म–दर्शनों में मान्य हैं। इन्हें पुण्य और पाप के नाम से अभिहित किया गया है।

कर्म सिद्धान्त का अर्थ है 'जैसा हम बोते हैं, वैसा ही काटते हैं।' इस नियम के अनुसार शुभ कर्मों का फल शुभ तथा अशुभ कर्मों का फल अशुभ होता है। इसके अनुसार 'कृत प्रणाश' अर्थात् किए हुए कर्मों का फल नष्ट नहीं होता है तथा अकृतभ्युपगम् अर्थात् बिना किए हुए कर्मों के फल भी नहीं प्राप्त होते हैं। सुख और दुःख क्रमशः शुभ और अशुभ कर्मों के अनिवार्य फल माने गये हैं। इस प्रकार कर्म सिद्धान्त 'कारण–नियम' है जो नैतिकता के क्षेत्र में काम करता है। जिस प्रकार भौतिक क्षेत्र में निहित व्यवस्था की व्याख्या 'कारण–नियम' करता है उसी प्रकार नैतिक क्षेत्र में निहित व्यवस्था की व्याख्या कर्म सिद्धान्त करता है।[1]

गुरु जाम्भोजी भी 'पुण्य–पाप' को मानते हैं। परमात्मा किसी के पापों को छिपाते नहीं तथा न ही पुण्य का हरण करते हैं। परमात्मा पाप–पुण्य से परे हैं। मनुष्य अपने कर्मों अर्थात् पाप–पुण्य हेतु स्वयं जिम्मेदार है। ईश्वर किसी को कर्म (पाप–पुण्य) करने से नहीं रोकता है। मनुष्य अपने कर्मों हेतु स्वतंत्र है। कर्म शुभ–अशुभ है तथा पाप या पुण्य–युक्त है, यह मानव के स्वविवेक का विषय है।

पाप न छिपां पुनि न हारां,
करां न करता वारूं।[2]

मनुष्य संसार में रहते हुए उचित या अनुचित एवं अच्छे या बुरे, जिस प्रकार के भी कर्म करता है, उसी के अनुरूप फल प्राप्त करता है। जाम्भोजी कहते हैं –

जो ज्यौं आवै सो त्यौं थरपां।[3]

व्यक्ति जिस भाव (शुभ या अशुभ) से कृत्य करता है, परमात्मा उसे यथावत् उसके अनुसार ही फल प्रदान करते हैं।

जो जैसा कर्म करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। जो पुण्य करता है, उसे सुख मिलता है और जो पाप करता है, उसे दुःख। मनुष्य की सच्ची परख उसके कर्मों (करनी) से होती है क्योंकि करनी के अनुरूप ही फल मिलता है।

जैसी करणी पार भी वैसा पारेख जोय पिरांणी।[4]

कर्म करना मनुष्य की नियति है। प्राकृतिक नियमानुसार प्रत्येक मनुष्य अपनी बुद्धि के अनुरूप उचित–अनुचित, सद्–असद् तथा भला–बुरा कोई न कोई कर्म अवश्य करता है। लेकिन मानव द्वारा किये गये कृत्यों का हिसाब मृत्यु के बाद उसे परमात्मा के समक्ष देना होगा। तब जीव को समझ आएगा कि उसे लोक में सुकृत्य क्यों नहीं किये। जीव को भेद–बुद्धि द्वारा ज्ञात करने योग्य तथा शुभ कृत्य करने चाहिए अन्यथा पश्चात्ताप के सिवाय कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

आगी सुरनर लेखो मांगै कहि जीवड़ा के करंण कमांणौं ?
जीवड़ै नै पाछौ सूझंण लागौ सुकरत नै पछतांणौं।[5]

अतः मानव को अपने कल्याण हेतु समय रहते उचित कर्म करने चाहिए, जब तक कि मनुष्य समर्थवान है, संसार में उसका निवास है, प्राण (जीव) विद्यमान है, शरीर में आत्मा का निवास है। सुखपूर्वक जीवनयापन के लिए पर्याप्त समय एवं साधन विद्यमान है और शरीर स्वस्थ है, तब तक सत्कार्य करना आवश्यक है। अगर समय पर सत्कार्य नहीं किये तो मृत्यु उसका विनाश कर देगी।

चलंण चलंतै वासि वहंतै,
जीव जीवंतै सासि फुरंतै,
काया नवंती कीवी न कमाई।
ताथैं जंवर विनड़सी रे भाई।[6]

अगर संसार में रहते हुए मनुष्य ने शुभ कर्म नहीं किये तो मृत्यु के पश्चात् यमदूत उसे दुःख देंगे तथा तब मनुष्य कुछ भी नहीं कर पाएगा। अतः समय रहते हुए मनुष्य को सचेत होकर विष्णु नाम जपते हुए सुकृत करने चाहिए।

'जंवर तणा जंमदूत दहैंला, ताथैं तेरी का न वसाई।'[7]

मनुष्य के भावी जीवन को निर्धारित करने में सर्वाधिक प्रभाव उसके कर्मों का है। जम्भवाणी के कर्म सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक का वर्तमान जीवन उसके अतीत के कर्मों का फल है तथा भविष्य का जीवन वर्तमान के कर्मों का फल होगा, इसमें परमात्मा का कोई दोष नहीं है। मनुष्य अपने किये हुए कर्मों का फल भोगता है। व्यक्ति सुखी है या दुःखी, ये उसके कर्मों का फल है।

विसन नै दोस किसौ रे प्रांणी ?
आपे खता कंमांणी।[8]

व्यक्ति की मनोवृत्ति तथा भावनाएं ही कर्म की मूल प्रेरक होती हैं। गुरु जाम्भोजी का कर्म सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म में अटल विश्वास है। मनुष्य अपनी तृष्णा के कारण कर्म करता है, इसी कारण व्यक्ति इस संसार के आवागमन के चक्कर में फँसता रहता है, जिससे समस्त दुःखों का जन्म होता है। अपने कर्मों के प्रभाव से ही व्यक्ति पुनर्जन्म लेता रहता है तथा चौरासी लाख जीव योनियों में चक्र काटता रहता है।[9]

गुरु जाम्भोजी ने सद् और असद् कर्मों की महत्ता बीज तथा पानी के उदाहरण द्वारा समझाई है। जैसा बीज बोया जाता है, वैसे ही फल की प्राप्ति होती है। इसमें पानी का कोई दोष नहीं है। वैसे ही मनुष्य भी अच्छे व बुरे दोनों ही होते हैं। अनेक मनुष्य अभावग्रस्त संसार में यों ही भटकते रहते हैं तथा अनेक कर्महीन होते हैं, इसमें परमेश्वर का कोई दोष नहीं है, फल की प्राप्ति तो कर्मानुसार होती है। सभी प्राणी अपने कर्मों के अनुरूप फल का भोग करते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण स्वयं के कर्म होते हैं।

'ताका फळ बीज कुबीजूं तो नीरै दोस किसायौ ?
क्यौं क्यौं भुंय भागै ऊंणां क्यौं क्यौं क्रंम विहूंणा।[10]

जीव का बार–बार जन्म लेना दुःखदायी है। कर्म सिद्धान्त को भली प्रकार समझकर आसक्ति रहित होकर निष्काम कर्मों का सावधानी पूर्वक सम्पादन करने से व्यक्ति का चित्त निर्मल तथा तृष्णाओं का विनाश हो सकता है एवं व्यक्ति को दुःख से स्वतः ही छुटकारा मिल सकता है। निष्काम एवं सात्त्विक कर्म ही भवसागर से पार कराकर पुनर्जन्म से छुटकारा दिलवा सकते हैं।

'करणी साच तरीलो।[11]

अगर संसार में व्यक्ति बुरे कर्म करता है, अन्याय करता है, तो उसके फल उसे अंत समय में अवश्य भुगतने पड़ते हैं। संसार में व्यक्ति अपने बुरे कर्मों को छिपा भी लेगा, तो भी परमेश्वर के समक्ष ऐसा नहीं कर पाएगा।[12]

जाम्भो जी ने दो तरह के कर्म माने हैं :– 1. प्रवृत्त कर्म, 2. निवृत्त कर्म।

प्रवृत्त कर्म– इस संसार में रहते हुए फल की इच्छा के लिए किये जाते हैं। इन्हें सकाम कर्म भी कहा जाता है। इनसे सुख–दुःख दोनों ही पैदा होते हैं। निवृत्त कर्म में कर्ता किसी प्रकार के फल की इच्छा नहीं करता है। वह जो कुछ करता है और यह सोचता है कि यह तो ईश्वर की इच्छा से हो रहा है, इसमें मैं कुछ भी करने वाला नहीं हूँ। निवृत्त कर्म जीव को बंधन में नहीं डालते और यही मुक्ति का कारण बनते हैं।[13]

गुरु जाम्भोजी ने सकाम कर्म हेतु मनमुखी शब्द का प्रयोग किया है तथा निष्काम कर्म हेतु 'गुरुमुखी' शब्द प्रयुक्त किया। 'गुरुमुखी' प्रवृत्ति से युक्त व्यक्ति उत्तम कर्म करता है तथा 'मनमुखी' व्यक्ति अकार्य करके गधे की भाँति व्यर्थ के ही कर्मों का बोझ ढोता है।

'गुरु मुख मुरखा चढै न पोहण मनमुख भार उठावै।'[14]

सांसारिक कर्मबंधन से मुक्ति हेतु दो मार्ग हैं– प्रथम सांसारिक कर्मों का त्याग (निवृत्ति) तथा दूसरा संसार में रहते हुए अच्छे कर्म करते हुए (प्रवृत्ति) मुक्ति का प्रयास करना। गुरु जाम्भोजी कर्मयोगी तथा प्रवृत्तिमार्गी थे, उन्होंने दूसरे मार्ग का समर्थन किया।

रे भल किरसांणी करणी नै घातौ हेलो।[15]

अर्थात् संसार में मनुष्य अज्ञानतावश मन, वचन व कर्म से बुरे कर्म करता है, उसे त्यागकर भली किसानी अर्थात् सुकृत्य करना चाहिए। व्यक्ति को अपनी करनी पर बार–बार चिन्तन करने हुए सदैव शुभ कृत्य करने चाहिए।

गुरु जाम्भोजी के अनुसार बुरे कृत्यों को करने वाले अपने कर्मफल से स्वतः कष्ट पाएंगे तथा ऐसे लोग कभी मुक्त नहीं होंगे। ऐसे व्यक्ति कर्म बंधनों के कारण बार–बार जन्म–मरण के आवागमन में भटकते रहेंगे तथा नरक में पड़कर अनेक यातनाएँ सहन करेंगे।

वै करणी हूंते खूंधा।
असी सहंस नव लाख भवैंला,
कुंभी दोजकि ऊंधा।[16]

मनुष्य के पुनर्जन्म तथा मुक्ति दोनों की प्राप्ति में कर्म ही महत्त्वपूर्ण हैं। कर्म ही मनुष्य के जीवन के निर्धारक हैं। अतः मनुष्य को संसार में रहते हुए सुकृत्यों की कमाई करनी चाहिए। मनुष्य के कर्म ही उसके सहायक एवं बाधक बनते हैं। यह जीवन तो अस्थायी है अतः जिसने इस संसार में सुकृत्य किये हैं, वही संसार सागर से पार हो सकता है।[17]

सुकृत्य (शुभ कार्य) ही मनुष्य के सहयोगी हैं। सुकृत्य कभी व्यर्थ नहीं जाते हैं अतः मनुष्य को जीवन्मुक्ति हेतु शुभ कार्य करने चाहिए।

'सुकरत अहळ्यौ न जाई।'[18]

जम्भवाणी के अनुसार सुकृत्य करते हुए अगर व्यक्ति को बाधाओं का सामना करना पड़े तो भी पछतावा नहीं करना चाहिए। अन्ततः सुकृत्य शुभफलदायी होते हैं।[19] वे निष्फल नहीं जाते। अतः मन, कर्म एवं वचन से हम जो भी करते हैं, वह नष्ट नहीं होता बल्कि वह फल के रूप में परिवर्तित होकर हमें मिलता है। हाथ से किया हुआ कर्म, वाणी से निकले शब्द और मन से किया हुआ विचार कभी व्यर्थ नहीं जाता। अतः कर्म करने में सदा सावधान रहना चाहिए।

---

1 धर्म – दर्शन की रूप–रेखा – डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृ. 101 परिवर्द्धित एवं संशोधित (चतुर्थ) संस्करण – 1988, 1990, प्रकाशक–मोतीलाल बनारसीदास बंगलों रोड, जवाहरनगर दिल्ली

2 जाम्भोजी की सबदवाणी (मूल और टीका) – (सम्पा.) डॉ. हीरालाल माहेष्वरी, सबद 49

3 वही, सबद 49

4 वही, सबद 71

5 वही, सबद 98

6 वही, सबद 65

7 वही, सबद 86

8 वही, सबद 111

9 वही, सबद 3

10 वही, सबद 20

11 सबदवाणी (गुटका) – (सम्पा.) स्वामी कृष्णानन्द आचार्य, सबद 29

12 वही, सबद 9

13 हिन्दी भक्ति काव्य धारा और जाम्भाणी साहित्य – प्रकाशक जाम्भाणी साहित्य अकादमी, पृ. 120

14 सबदवाणी (गुटका) – (सम्पा.) स्वामी कृष्णानन्द आचार्य, सबद 120

15 श्री जम्भवाणी गुटका – (सम्पा.) डॉ. हीरालाल माहेष्वरी, सबद 73

16 वही, सबद 82

17 वही, सबद 51

18 वही, सबद 97

19 वही, सबद 32